International Journal of Applied Research 2017; 3(6): 1208-1209

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(6): 1208-1209
www.allresearchjournal.com
Received: 29-04-2017
Accepted: 30-05-2017

गीता कुमारी
नेट/जे०आर०एफ०/गोल्ड मेडलिस्ट, गवेषिका विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, भारत

Corresponding Author:
गीता कुमारी
नेट/जे०आर०एफ०/गोल्ड मेडलिस्ट, गवेषिका विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, भारत

वर्तमान संदर्भमे 'पनिपत'

गीता कुमारी

सारांशः
अत्याधुनिक मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे जे किछु सशक्त लेखकक आगमन भेल ताहिमे जीवकान्त सेहो अबैत छथि। जीवकान्त सबसऽ हटि कऽ छलाह, अपना रंगक एकसर। हुनका फुसिकें फुसि आ साँचकें साँच कहबाक सामर्थ्य छलनि। ओ समतल पर बात करैत छलाह, ओ किछु नुकाबऽ नहि जनैत छलाह। जे मोनमे अबैत छलनि निधोख भऽ कऽ बजैत छलाह। ई निडरता प्रारम्भे सऽ जीवकान्तमे विद्यमान छलनि। साहित्यमे हिनक प्रवेश कविक रूपमे भेल। हुनका लिक्खाड़ लेखक कहल जाइत छल। कविते लिखऽ लगलाह तऽ बहुत रास लिखलाह। हिनक बारह गोट कविता संग्रह प्रकाशित छनि जाहिमे ''तकैत अछि चिड़ै'', पर हिनका 1998ई. मे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त भेलनि। ''निशान्त की चिड़िया'' नामसँ एहि पोथीक हिन्दी अनुवाद सेहो भेल। तत्पश्चात कथा, उपन्यास, निबन्ध, समीक्षा आ अनुवाद से हो कयलाह। अर्थात् साहित्यक कोनो विधा हिनकासँ बाँचल नहि अछि।

प्रस्तावनाः
हिनक पाँच गोट उपन्यास प्रकाशित अछि, एतय हम 'पनिपत'क चर्चा करब। एहि उपन्यासक नायक अरविन्द अछि जे निम्नमध्यवर्गीय ग्राम्य परिवारसँ अबैत अछि। ओ आवेदन पर आवेदन दैत रहैत अछि मुदा नौकरी नहि पबैत अछि। शहरसँ गाम घुरैत काल ओकर मोनमे नाना प्रकारक विचार उठैत अछि। जाहि आशा, आकांक्षाक संग ओ गाम छोड़ने छल से पूरा भेलैक कहाँ। ओकर माय–बाप की की ने सपना देखने छल होयत? से अरविन्दकें देखिते सभटा चकनाचूर भऽ जेतै। कोन मुँह लऽ कऽ अरविन्द माय–बाप लग जायत? पत्नीकेँ कोन मुँह देखाओत? गउआँ–घरूआ एकरा देखिते की–की ने बजतै? कतेक के ई चुप कराओत। आई तँ अपन गामे अनभुआर भऽ गेलै। सभटा चिन्हार अनचिन्हार भऽ गेलै। मुदा की करय?
एतय आबि ओ सोचैत अछि जे खेती–गृहस्थी करत, मोनो मना लैत अछि, मुदा ओकर पत्नी सीमा एहि दुआरे एम.ए. पास लड़कासँ विवाह केने छल? जे आब ओ खेती–गृहस्थी करतैक? ओ तँ की की ने मोनमे सोची रखने छल? एक अलग दुनिया बना लेने छल, जाहिमे प्रेम रहत, विश्वास रहत आ रहत एकटा सेहन्तगर भविष्य। मुदा ई रंगीन सपना ओकर पल्लवित–पुष्पित होयबासँ पहिने कड़गर रौद तर मुरझा गेलै। नहियो चाहैत ओकर असंतोष, अवसाद अरविन्दक समक्ष आबिए जाइत रहलै–
''सीमाकें उत्तर देबाक मोन भेलनि जे पृथ्वी तँ ठीके बड़ी टा छैक मुदा आब नोकरी कतहु ने छैक.... पाइ कतहु ने छैक..... मुदा हुनकर तामस आर बढ़ि जयतनि
सीमा किछु ने बाजलि। उठलि। हाथ बढ़ाकऽ नोटक गोंट लऽ लेलक, आ ओकरा बिनु देखने–सुनने पुनः ओही कुर्ताक जेबीमे धऽ देलकैक।
तखन सीमाक अवस्था ओहने छलनि। ओ अपन हताशाकें उग्र अभिव्यक्ति नहि देबऽ चाहैत छलीह, तथापि तेर–तर ओ खदकैत आ ढ़ाकनसँ झाँपल तरे–तर खदखदाइत रहलीह।''(1)
अरविन्द पहिल दिन बड़ उत्साहपूर्वक जलखै लऽकऽ खेत पर जाइत अछि। जखन ओ खेत पर सँ अबैत अछि तँ माय अपन बेटाकें देखिते झूर–झमान भऽ जाइत अछि। मायकें आत्मा चित्कार कऽ उठैत छैक, सीमा सेहो अपन वरकें देखि मुरझा जाइत अछि।
गाम आब ओ गाम कहाँ रहलै? जतय पढ़ल–लिखल लोकक सम्मान होई, काजक गुणगान होई। जतय आवश्यकताकें आवश्यकता बूझल जाय। आबतँ अपनो काजकें लोक हेय दृष्टिसँ देखऽ लागल अछि, ओहि पर खिल्ली उड़बऽ लागल अछि। जँ पढ़ल–लिखल खेती करय तँ ओकर की हाल हेतै से कल्पना कयल जा सकैत अछि। आब गामोमे राजनीति अपन पैर पसारि लेने अछि। जाहि कारणें गामक वातारवरण भयावह आ अशांत भऽ गेल अछि। आब अरविन्दकें अपन निर्णय पर पछतावा भऽ रहल छैक। ओ जखन सीमा दिस तकैत अछि तऽ ओकरा बुझाइत छै जे ओ सीमाक दोषी अछि।

ओएह अछि जे सीमाक जिनगीकें नरक बना देलक। एहि आत्मग्लानीमे ओ सदिखन जड़ैत रहैत अछि–

''अरविन्द बुझलक जे सीमाकें दुःख होयतनि भगनाशाक। एतेक कालधरि ओ बुझने छलि जे ओकर स्वामी कोनो टेरबीपर नोकरी छोड़िकऽ चल आयल अछि। एकर एक अंश स्वादिष्टो छलैक, आ दोसर अंश तीतो..... मुदा आब जे वस्तु–सत्य छैक से निट्ठाते तीत छैक–तीते–तीत, तीते–तीत, तीते–तीत।[2]

अरविन्द अपनाकें निराश पबैत अछि। ओ अपन परिवारकें एहन स्थिति में अनबाक एकमात्र दोषी अपनाकें बुझैत अछि। मुदा आब की हो? अरविन्द एहन एखनो कतेको लोक लग खेती करबाक कोनो संस्थान नहि छै। एखनो ओ परम्परागत ढंगसँ खेती करैत अछि। विज्ञानक ऐते प्रगति भेलाक बादो ओ एखनो कोदारी, खुरपी आ हलबैलसँ खेती करबालेल अभिशप्त अछि। एखनो पानि लेल आकाश दिस तकैत अछि। अतिवृष्टि–अनावृष्टिक मारि सहबाक लेल विवश अछि। एहन स्थितिमे अरविन्द की कऽ सकैत अछि। ओ कोदारी तँ उठबैत अछि मुदा हाथसँ कोदारी घीची लेल जाइत छै, आ ओ विक्षुब्ध भेल भोजन–भाषण दिस घिसिआइत चल जाइत अछि। ओ अपन मोनकें शान्त नहि राखि पबैत अछि।

एतय जीवकान्त व्यक्तिमे निहित ओहि भारतीय मिथॉलोजिक दिग्दर्शन करबैत छथि जाहिमे एहन मान्यता अछि जे अन्हार अछि तऽ इजोत अछि। राग अछि तें विराग अछि। दया अछि तें क्रूरता अछि। नीक अछि तें अधलाह अछि। अर्थात् दुनू विरोधी विचारधारा मनुक्खक भीतरे नुकायल रहैत अछि जे अनुकूल आ प्रतिकूल परिस्थिति अयला पर बहराइत अछि। अर्थात लोक स्वभावसँ खराब नहि होइत अछि, खराब होइत छैक ओकर परिस्थिति जकर मोहपासमे बांधिकऽ गलत निर्णय लेबाक लेल विवश भऽ जाइत अछि।

एहि प्रसंग देवकान्त झा कहैत छथि जे– ''पनिपत एक मनोविश्लेषणात्मक प्रकृतिक उपन्यास थिक जे विषम परिस्थितिक बीच व्यक्तिक विकासकें चित्रित करैछ। उत्साही युवक अपन अस्तित्व रक्षाक लेल संघर्ष करैत अछि, मुदा सब प्रयासमे ओ दयाक पात्र बनैत अछि। अन्ततः घोर हताशाक बीच हारि मानि ओ पलायनवादी लोकक उपहासक विषय बनैत अछि।''[3] से ठीके। तकर समाजमे बहुत रास उदाहरण विद्यमान अछि।

अस्तु, जीवकान्त गामक बहिरंग ओ अन्तरंग स्वरूपकें निकटसँ देखलनि ओ भोगलनि अछि। तें गामक चरित्र, ओकर आन्तरिक गतिविधिकें तथ्यात्मक विवरण देबामे समर्थ भेलाह अछि। सम्प्रति गाम ऊपरसँ शान्त, सुन्दर, सुखी, संतुलित देखबामे अबैत अछि, मुदा भीतरसँ गाम ओतबे डेराओन अछि। जकर तहमे गाम अशान्त, असंतुलित एवं भग्न अछि। 'पनिपत' उपन्यासक माध्यमे जीवकान्त गामक इएह रूपकें देखेबाक प्रयास कयलनि अछि।

एतबे नहि एहि माध्यमे ई मिथिलाक स्वरूप, संस्कृति, परम्परा आ विश्वासकें छहोछित होइत सेहो देखोलनि अछि। जाहिमे आधुनिक समाजक प्रतिबिब देखार भऽ उठैत अछि।

जीवकान्तक भाषा–शैली ओ वर्णन–विन्यास अभूतपूर्व अछि। हिनक प्रायः सब उपन्यासमे मिथिलाक सहज ओ स्वभाविक रूप देखबामे अबैत अछि। उपन्यासमे स्थानीय लोकोक्ति–मुहावरा, सार्थक ओ अर्थगर्भित विशेषणक प्रयोग, लोकग्राह्य तत्सम पद–विन्यास, विदेशी शब्दक मैथिली रूपक प्रयोग समुचित ढंगसँ कयल गेल अछि। जीवकान्तक भाषा–शैलीक ई विशेषता रहलनि अछि जे ओ जटिलसँ जटिल विषयक अभिव्यंजना बड़ मनोरम रीतिएँ करैत रहलाह अछि। यथा–अरविन्दक एहि उक्तिमे देखल जा सकैत अछि–

''जेना कोनो पहिले–पहिल प्रसव करऽवाली माय नेनाक मुँह, ओकर लाभर–चाभर जीह, ओकर चेहाँ–चेहाँ कानब सुनबा ले' मरणप्राय प्रसवपीड़ा सहबा ले अपनाकें प्रस्तुत करैत रहैत अछि आ आशंका आ भयसँ ऊपर ओकर प्रतीक्षा आ आनन्द लह–लह करैत रहैत छैक। अरविन्द आत्मविश्वासकें आत्मरक्षा ल' पिजबैत रहल, ओहिना.... एकसर आ असीमित धैयसँ।''[4]

जीवकानत बहुपठित रचनाकार रहथि। विश्वक अनेक भाषा साहित्यक हुनका गहन अध्ययन छलनि, से सहजें हुनक उपन्यासमे दृष्टिगत होइत अछि। ओ वातावरणक स्तर पर हो कि पात्रक सतर पर, भाषाक स्तर पर हो कि शैलीक स्तर पर–सभठाम ओ अपन योग्यता, अनुभव आ अध्ययनकें उजागर कयलनि अछि।

निष्कर्षतः कहि सकैत छि जे 'पनिपत' एकटा सामाजिक उपन्यास थिक जाहिमे सामाजिक यथार्थकें नीक जकाँ अभिव्यक्त कयल गेल अछि। स्वतंत्रता प्राप्तिक पश्चात जे जनमानसमे सुखद भविष्यक कल्पना छलैक से आशा समय संग खण्डित भऽ धराशायी भऽ गेल। आर्थिक समताक स्थान पर विषमता, सामाजिक सामंजस्यक स्थान पर विरोध एवं राजनीतिक लोकोपकारिताक स्थान पर स्वार्थपरता आ भ्रष्टाचार नग्ननृत्य होमय लागल। ताहिमे विशेषरूपें उच्च डिग्री प्राप्त युवावर्ग जीवनमे नैराश्यक भावना आबि गेल आ ओ लोकनि हताश आ निराश होमय लागल। हिनक उपन्यासमे ओहन व्यक्तिक कथा कहल गेल अछि जे समाजक एकाइ तँ थिक मुदा दूर–दूर धरि तथाकथित समाजसँ ओकर कोनो सरोकार नहि बुझना जाइत अछि। एहि उपन्यासक शीर्षक 'पनिपत' एहि कारणें सार्थक लगैत अछि जाहिमे पढ़ल–लिखल बेरोजगार समाजक मुख्यधारामे एखनो पताय रहल अछि।

संदर्भ–सूचीः

1. जेना कोनो गाम होइत अछि, संकलन आ संपादन– प्रदीप बिहारी, प्रकाशक– चतुरंग प्रकाशन, बेगूसराय, संस्करण– 2015, पृ.– 233
2. तत्रैव, पृ.– 238
3. आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहास, लेखक– देवकान्त झा, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण– 2017ई., पृ. – 195
4. जेना कोनो गाम होइत अछि, संकलन आ संपादन– प्रदीप बिहारी, प्रकाशक– चतुरंग प्रकाशन, बेगूसराय, संस्करण– 2015, पृ.– 245